रामलोचन ठाकुर

इतिहासहंता : इतिहासहंता

रामलोचन ठाकुर

इतिहासहंता



रामलोचन ठाकुर

इतिहासहंता—शिखा प्रकाशन क पहिल प्रस्तुति, दुर्घर्ष अग्निहस्ताक्षर रामलोचन ठाकुर क पहिल कविता संकलन आ अग्निलेखन क पहिल दस्तावेज अइ, साबित करैए जे कविता मानसिक व्यभिचार क लेल शब्दक यूटोपिया नै अइ.

अग्निलेखन : यथास्थिति क प्रति अतिशय असहिष्णु, आक्रोश क तीक्ष्णभावाभिव्यक्ति अइ मार्क्स-वादी चिंतन स संपृक्त संघर्ष चेतना क निर्माता. स्व-निर्माण क प्रति घोर आस्थावान, तैं विध्वंस के आवश्यक मानैत कोनो तरहक सुधारवाद के पूर्णतः अस्वीकार करैए. मानैए जे मनुखक जीवनक सुन्दरतम क्षण ओ हेतै जखन ओ क्रांति क साक्षी बनत-सहभागी बनत. तावत साहित्य क काज छै संघर्ष क वैचारिक धरातल तैयार करैत रहनाइ जाइ मे मात्र स्थिति निरूपण नै, दिशाबोध भयंकर रूप स आवश्यक छै. ★★

इतिहासहंता

रामलोचन ठाकुर

शिखा प्रकाशन ॥ कलकत्ता

इतिहासहंता : कविता संकलन : रामलोचन ठाकुर

प्रकाशक—
कुणाल-अग्निपुष्प
शिखा प्रकाशन,
बिहार प्रवासी छात्र निवास,
१७१/ए, महात्मा गांधी रोड,
कलकत्ता-७

मुद्रक—
पायनियर आर्ट प्रिन्टर्स,
३२-बी, वृन्दावन बैशाख स्ट्रीट,
कलकत्ता-५

आवरण : कुणाल

मूल्य—
साधारण—दु टाका
विशेष—चारि टाका

दोसर खेप—फरबरी, १९७८

इतिहासहंता : कविता संकलन : रामलोचन ठाकुर

क्रम

मैथिली

•

बहुत दिन पहिनेक थिक ई बात
मिथिलाक राजा जनकक बेटी
आ
अयोध्याक राजा दशरथक बेटा
रामक स्त्री
मैथिली कें
बनवासक समय शुन्य पर्ण कुटी सं
चोरा क ल गेल छल
लंकापति रावण लंकाराज
आ खबरि पबितहिं राम
क देने छलथिन हमला लंकाराज पर
सभ राक्षस कें मारि
ल अनने छलाह आपस
मैथिली कें
कहैत छलीह मैय्या
थिक ई सत्यकथा
मुदा हमरा बुझाइए जे कुनू खिस्सा थिक

सत्य त ई थिक जे
मैथिली कें
वन सं नवि
नैहरे सं
बलजोरी घिसिअबैत
ल गेल छल राक्षस-राज
आ ओखन रखने छनि
अशोक वाटिका मे
शोकाकुल मैथिली जतय
कुहरि-कुहरि
अपन जीवनक अन्तिम क्षणक
प्रतीक्षा क रहल छथि
की करती बेचारी
विदेह बाप पहिनहिं देह त्यागि चुकल छथिन
राम छथिन नपुंसक
आ
हुनके सं जनमल
लव आ कुश की बीर पुरुष हेथिन
काल्हियो त देखल
दशरथक बरखी मे
आयल अभ्यागत लग
जनोक हेड़रा देने
तीनू बापते
मैथिलीक आपसीक सिपारिसक
भीख मङ्गैत छलाह •

२७ मई, १९७२

सर्वहारा टी-स्टाल

•

(सर्वहारा टी-स्टाल महाकाव्यक एकांश)

•

विशाल एक गोट पंक्ति—
हमर पड़ोसी रिक्सा बला
अन्नक अभावें कंकाल भेल ओकर शरीर
आ औषधक अभाव मे
काहि कटैत ओकर तीन बर्खक रोगाह नेना,
ठकुरिया पूलक कात मे
'बाबू दूटि पयसा' क माला जपैत
कोढ़ि अपंग भीखमंगाक दल,
सार्वजनिक मुत्रालय लग
पंक्तिवद्ध वेश्याक दल
आ
तैखन कात द'
कटाक्ष करैत एक दल कुकुरक
एकटा पिलियाक पाछां
जेना कुनू स्वयंवर मे
राजकुमारी कें पाबै लेल
अपन बीरताक प्रदर्शन करैत हो
—चलि जाइए

आ तकर बाद
ओ हस्तरेखा बिचारक
जे भोर सं सांझ धरि

लोकक हाथक रेखा देखि भाग्यक निर्णय करैछ
(आ जकर अपना हाथक रेखा
भरिसक मेटा गेल छैक)
ओ बतहा जे
रोज बीड़ी पीबै लेल माकि लैत छल
दू गोट पाइ
आइ—मरि गेल
केओ कहैए
तरि गेल—हम बजैत छी
आ तकर बादे 'शेलीकेफे'
कुनू अन्तर नहि होइत छैक
'शेलीकेफे' 'शाकी' 'सर्वहारा' वा
शिवालय मे
सभठाम लोकक भीड़
आ भीड़ मात्र भीड़ होइए
अभ्यस्त लोक
लज्जा निवारण लेल
कपरा पहिरब वा
फैसन मे नाङ्गट रहब
एके बात थिक
त कि
हमरो लेल कविता लिखब
कुनू फैसन थिक
वा
आदति ●

२४ अक्तूबर, १९७२

विध्वंस मात्र

●

यद्यपि हम गाबी गीत
मीत
हो किन्तु बैसि गेल आंत जकर
आ क्षुधा ज्वाल सं दग्ध मन
उधिआइत रक्त
नहि मोसि
कलम छीनल हाथक
की बोरि देत नहि
रक्तहिं मे
आङ्कुर अपन
होयत निश्चित काव्यक सर्जन
(वरु छन्द पतन)
आ
सरिपहुं उगिलत आगि कलम
हो चिनगीये
रखने अपना अन्तरक मध्य
क्षमता अजस्त्र
करबाक सृष्टि दावानल कें
जे जड़ा करत सुड्डाह
मात्र कूड़े-कर्कट नहि

घास-पात
बंसबिट्टी-बेल-बबूर-बर-पीपरक गाछ
निज छाया मे
नञि दैछ कदन्नो जे जनमय
संगहि डाहत से
फूल-पात
उज्जर-हरियर-पीयर
अथवा
जेकिछु पाओत
नञि देत बंचय
हुंकार हमर तें आइ प्रलय

विध्वंस मात्र विध्वंस
करत जे
पथ-प्रशस्त
नव निर्माणक
नञि हैत जतय पुनि
अनाहार वा रंग भेद
केओ ऊंच-नीच वा
छोट-पैघ
तें मीत
आइ नञि गीत
समय केर मांग
एक
विध्वंस मात्र
विध्वंस ●

२४ जून, १९७४

नाटक, निर्देशक आ एक गोट कविता

●

आ
ओ बहुप्रचारित नाटक
जखन कएल गेल मंचस्थ
उठाओल गेल पर्दा
सूनल गेल दर्शकक कोलाहल
फूल-मालाक बदला ईंट-पाथरक पथार आ
'पर्दा-खसाउ, पर्दा खसाउ'
अहिना
बरखो होइत रहल पूर्वाभ्यास
कएल जाइत रहल मंचन
किन्तु अपन सड़ल कथ्यक कारने
नञि पाबि सकल कहियो
दर्शकक सहानुभूति
वाह-वाही

खाइत रहल गारि-मारि
आ अखन
जखन फेर भ रहलए मंच
ओही पुरना नाटकक
ओही पुरना मंचपर
नव तकनीक सं

नव निर्देशकक निर्देशन मे
किछु कलाकार कें बदलि—
थाकल ठेहिआयल दर्शक
औंघा रहलए/ओ नञि चाहैछ तुरत्ते यवनिकापात
आ तें
जखन मंच सं उतरैए
कुनू एक कलाकार
दर्शक दीर्घा सं उठा कें ल जाइए
एगो युवती कें
प्रतिवादी भाइक हत्याक पश्चात्
मंच पर कएल जाइए ओकरा संग
सामूहिक बलात्कार
अभिनयक नाम पर
तैयो शान्त—एकदम चुप्पी आ
आनन्दोन्मत्त भेल अभिनेता सभ
क रहलए गंरिथैया नाच
'वींग' मे
स्काच मे सोडा मिलबैत निर्देशक
खुसी सं आत्म विभोर
फुलि क कुप्पा भ रहलए
जे अन्त तक ओ
आ उएह मात्र
ओही गन्हाइत कथ्य बला नाटक कें
सफल मंच करबा मे
सफलीभूत भेल ●

२७ मार्च, १९७३

अन्तरक ज्वाला हमर...

●

जनैं छी हम
शब्द मे नञि छैक ओ सामर्थ्य
क सकै जे सही व्याख्या भावना कें आइ
तथापि बन्धु !
तोहर कल्पना केर
सूर्य स्वर्णिम
उदय सं पूर्वहिं बनाओल गेल बन्दी
आशकेर जे अल्पतम आलोक
सेहो मिझा गेल' छि
पसरि गेल' छि गुज्जसन अनहार
चारू कात
तों निष्प्राण सन निसबद

गबदी मारि देलह
नियति तोहर यैह
यद्यपि छी हमहुं निसबद्द
किन्तु रखैछ निश्चित अर्थ
प्रति निसबद्दता हम्मर
अन्तरक ज्वाला हमर न मिझाइछ कुनहुं दिन
उद्धिक ढेउ सन
जे उठैत अछि
भ जाइछ पुनः विलीन
चलैत' छि ई क्रम कतेको खेप
आ
पुनि उठय बड़का ढेउ
अपन अजेय शक्तिक संग
दैत' छि तोड़ि केहनो बान्ह
बढ़ि जाइछ पुनः
बन प्रान्त सं मार्गाचल
पुनि शहर तक
करैत एकाकार
सन-सन करैत हहाइत
स्वर संगीत शंखक नाद
विजयोल्लास मे
पुनि पांक उर्वर शक्ति
नव निर्माण हेतु प्रदान करईत
प्रलय केर पश्चात् हो नव सृष्टि
थिक सिद्धान्त ●

२८ अगस्त, १९७५

अग्रजक नाम / प्रजातंत्र

(कवि सोमदेवक लेल)

●

आ
हमर जन्म
एगो घटना वा दुर्घटना
जे हो भेल' छि धरि एही काल मे
किन्तु एत्तेटा भेलाक बादो
ई परिवेश
जेना अनचिन्हार लगैछ

भाइ !

हमरा मन अइ
अहां कहने रही—
पहिने एगो राजा होइ छलै
राज्याधिकारी आ
उत्तराधिकारी होइ छलै ओकर बेटा
ओ राजतंत्र कहबै छलै
किन्तु आइ
राज्याधिकारी होइ छइ प्रधान मंत्री
उत्तराधिकारी ओकर बेटी
एतय राजाक नामे नञि
होइ छइ समस्त काज
प्रजाक नाम
प्रधान मंत्रीक उकासी सं बाइत्याग पर्यन्त
परसू प्रधान मंत्रीक
बापक बरखी रहैक
देशक लेल
कालि प्रधान मंत्रीक एलसिसियन कूकुरक आङनवाली
एगो पिल्ला प्रसब केलक

जनताक लेल
आ आइ
हुनक सुपुत्रक जन्मदिनक अवसर पर
अमरावतीक सभ सं पैघ
शीत-ताप नियंत्रित होटल मे
विराट् पार्टीक आयोजन भेल'छि
कोरमा, पोलाव''''''
पाइन जकां बहिरहल
                    विदेशी शराब
(कहियो एहि देश मे दूधक नदी बहैत छल)
समाजवादक लेल
गरीबी हटेबाक लेल
प्रत्येक दिन बान्हल आइछ
नव-नव
प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष कर
आ शान्ति रक्षार्थ
रोजे होइए पुलिसक ताण्डव नृत्य
ओना
यज्ञ आइयो होइ छइ
छोट सं ल अश्वमेध पर्यन्त
मुदा पुरोहितक बदला
होइत छइ प्राइवेट सेक्रेटरी
आ बलिप्रदान
छागरक नञि
मनुक्खेक देल जाइ छइ
भाइ !
ई कहाँदन प्रजातंत्र छैक •

२३ अगस्त, १६७४

अग्रजक नाम / केहन लागत अहां के

•

भरि दिनुका अकथ परिश्रमक बाद
मुनहारि सांझक घूरी आ
दुरुक्खा मे भेटय झुलैत कुनू नामपट
कुनू आमोद गृहक
जोड़ल अहींक नामक पश्चात्
त केहन लागत
केहन लागत अहां कें
जं भनसाघर कुनू

कसाइ खाना-कम किचेन-कम रेस्टोरेन्ट
बनि गेल हो
आ
अहांक अनुजक ससड़ी काटल खलड़ी ओदारल
देह फुलेत हो पशुअवि मे
ओकर टटका मांसक कबाब
आ
टटका रक्तक शराब बेचल जाइत हो
त केहन लागत
केहन लागत अहां कें
जं अहांक सुतबाक घर
कुनू वेश्यालय बनि गेल हो
आ वेश्याक रूप मे
सजल-धजल मशकड़ी करैत
ककरो संग बैसाओल होथि अहींक विवाहिता
त केहन लागत
केहन लागत अहां के
जं एहि सभक उपभोक्ता
अहींक पड़ोसी होथि
आ
संचालक उएह लोक
जकरा
निराश्रित जानि
कालि राति अहां आश्रय देने रहिऐक
त केहन लागत ●

२० मइ, १९७६

अग्रजक नाम / हम बिसरि गेल छी
(कवि जीवकान्तक लेल)
●

भाइ !
एकटा दीर्घ अन्तरालक बाद
जखन बैसल छी आइ
लिखबाक हेतु पत्र
नहि, पत्रक जबाव
त फेर मन परि रहल अइ
अहांक संग बिताओल ओ क्षण
अहांक गप्प
सिंगरहार, हीना, रजनीगंधाक फूल
ओकर सुगन्ध सं महमह करैत वातावरण
त लगैत अछि जेना
सभ नेना मे
नानीक मुंहे सूनल कुनू परी कथा हो
कुनू गुलबकावली फूलक कथा
एहि गुमसड़ानि वातावरण मे बेसि
ओकर कल्पनो केनाइ कि सम्भव छैक ?
भाइ !
कमलक फूल केना फुलाइत छैक ?
ओड़हूलक फूल कि सरिपहुं लाल होइत छैक ?
केहन होइत छैक खजन चिड़ैया ?
नहि
सरिपहुं हम नहि लिखि सकब
भरिसक ओ भाषा
जाइ मे लिखल जाइत छैक पत्र
अपन आत्मीयक नाम—
हम बिसरि गेल छी ●

२ जून, १९७६

एहि जम्बूद्वीपक भारत खण्ड मे

●

हँ
एही देश मे
एही देश मे भेल रहैक
देवासुर संग्राम
अभूतपूर्व संग्राम
कखनो चोरा-नुका क
कखनो सोभा-सोभी
आ
आइ सं बर्ख तीसेक पहिने
विजयी भेल छलाइ
देवगण दधीचिक अस्थि सं
निर्मित बज्रक प्रभावें पराजित
भेल छल असुरगण पड़ा गेल छल
दानव देश—पाताल लोक

आ ताइ दिन
कतेक धूमधाम सं मनाओल
गेल छल विजयोत्सव सजाओल
गेल छल दीपमालिका कएल
गेल छल शंखध्वनि
आ तकर बादे
पांचोपुर सं आनि
पवित्र माटि
परम दक्ष शिल्पी द्वारा
भेल छल निर्माण
विशालकाय विश्वमोहिनीक
जनगणक कल्याण निमित्त
प्रतिष्ठापित कयल गेल छलीह
अमरावतीक
विशाल अट्टालिका मे
आ
तहिया सं
कलावती कन्या जकां
दिन दुन्ना
राइत चौगुन्ना
बढ़ि रहल शोभा
अमरावतीक
आ एहि देश मे
क्षुधा-पिपासा-महामारी
अशिक्षा-अत्याचार-अनाचारक
साम्राज्यक आयाम
अनायासे बढ़ि रहलए
ओना

एहि सभ सं
मुक्तिक निमित्त
प्रति पांच बर्ख पर
कएल जाइछ महायज्ञ
छप्पन कोटि मानव कें साक्षी राखि
छ कोटि देव-ऋषि द्वारा
पचपन कोटि
पंचानबे लाख स्वर्ण-मुद्राक
जव-तील-घृतादि सं
कएल जाइछ होम
विश्वमोहिनीक नामें
पुण्य-प्राप्त कतेको
सशरीर पहुंचि जाइछ अमरावती
कतेको
पुण्यक्षयें रहि जाइछ धिनाइत
छप्पन कोटि लोकक संग
लगओने आश
बितबाक पांच टा बर्ख
आ
अहिना बितल जाइछ
दिन पर दिन
मास पर मास
बर्ख पर बर्ख
एहि देश मे
एहि जम्बूद्वीपक भारत खण्ड मे ●

२३ अगस्त, १९७०

समान धर्माक नाम/ओना होइत त इएह आयल'छि

●

ओना होइत त इएह आयल'छि
जे कुनू कर्णक पराक्रम सं भीतु व्यवस्था
ओकरा अवैध संतान घोषित करैछ
आ
कुनू आदिवासीक गरदनि मे

लपेटल जाइछ मुइल सांप प्रजावत्सल राजा द्वारा
(किन्तु, ओकरे बेटाक
'श्राप' सं होइछ जखन मृत्यु ओकर
त ओकरा घोषित करैछ
ऋषि-पुत्र)

ओना होइत त इएह आयल'छि
जे कुनू एकलव्यक औंठा काटल जाइछ
आचार्य द्वारा
आ
कुनू शूद्रक
तपस्या करैक अपराध मे
मर्यादा पुरुषोत्तम द्वारा
उड़ा देल जाइछ माथ

ओना होइत त इएह आयल'छि
जे लोक कल्याणार्थ
विषपान कएनिहार
शिव कें अपन वर्ग सं फुटका
मौखिक सिंहासनारूढ़ क देल जाइछ
यद्यपि हुनक नाम भोला
बुड़िबकक पर्याय बनले रहैछ
तें
बन्धु !
करबाक अइ होलिकादाह
ओहन इतिहास-पुराणक
थूकि देबाक अइ ओहन रामराज्य पर
करबाक अइ पर्दाफाश
पाण्डुक नपुंसकताए टाक नञि

ओकर जन्म कथाओक
परीक्षितक दुराचारिताक
रामक स्वेच्छाचारिताक
आचार्यक कुकर्मक—
समय आबि गेल'छि
हमरा सभकें अपनहिं लिखबाक अइ
अपन इतिहास
जे सरिपहुं थिक संघर्षक
वर्ग संघर्षक
घुरा देबाक अइ ओकर अस्त्र
ओकरे दिश
हमर श्राप नञि
शक्तिए बनत तक्षक
जे कोटि-कोटि परीक्षितक
विनाशक कारण बनत
हमरा लोकनिक अध्यवसाए होयत
पथ-प्रदर्शक
आ
संगठित शक्तिये होयत
कुंडल-कवच
आब विलम्ब नञि
बन्धु !
बिगुल बाजि गेल'छि
विषपान त बड़ कएल
अमृत पानक समय आबि गेल'छि ●

१५ मार्च, १९७५

अग्रजक नाम / इतिहासहंता

•

आ
ताबत
बहुत बात बीति गेल रहै
बहुत घटना घटि गेल रहै

छ दिनुका बाद
हमरा
आनल गेल छल
असोरा पर
जतय हम
सुनने रही
फ्रांस रूस चीनक
क्रान्तिक कथा
वियतनाम लाओस कम्बोदिया
चीली आ क्यूबाक
संग्रामक कथा
रूसो मार्क्स एन्जिल्स
लेनिन स्टालिन माओ
चू-ते होचिमिन्ह मारकुस
नेरुदा सार्त्र
कैस्त्रो चे-गुएवाराक नाम
राजकमल सुकान्त गोर्की
लू-सुन लुमुम्बाक
मृत्यु सम्बाद
हेमिंग्वेक आत्महत्या
आर कते रास की…
किन्तु
विश्वास करू भाइ
हम नहि कानल रही
ओना
हाथ-पैर
फेकने धरि रही अवस्से
आ

असोरापर सं
गुरुकि गेल रही
बीच आङ्गन मे
ममतामयी माय
चिचिया उठल छलीह
किन्तु
इएह गुरुकब
एगो बन्धन तोड़बाक
पहिल प्रक्रिया छल
आ
हठात् एकदिन
आङ्गनक सीमा नाँघि
बहरागेल रही
बाट पर
मायक ममता
बाबूक वात्सल्य
दाइक दुलार
काकीक कोरा
काकाक कन्हा
संगी सभक—
सिनेह कें ठोकरा
आ
एहिना शुरु भेलछल
हमर यात्रा
हम मानैत छी जे
बड़ बिलम्ब सं भेल अइ हमर जन्म
हम मानैत छी जे
एखनो धरि हमरा नञि भेटि सकल

कुनू समानधर्मा सहयात्री
किन्तु
भेटतधरि अबस्स
से अइ अटल विश्वास
मुदा—
अहां नञि
अहां सन नञि
अहां
हमरा सोझा सं फराक भ जाउ
हम नञि देख' चाहै छी
अहांक मुंह
नञि सुन' चाहै छी
अहांक मुंहे कुनू इतिहास
ई एक-एक घटना
एक-एक नाम
की ताइ सं कम महत्वपूर्ण अइ
कमे नीक होइत
जे आइ
अहूं बनि गेल रहितौं
कुनू
एगो घटना
एगो नाम
एगो इतिहास
आ हमर छाती
सूपसन भ गेल रहैत
किन्तु
अहां से नञि भेलौं
अहां से भइयो ने सकैत छी

आ हम
एखन नञि लिखि सकब
करिया मोसि सं
    उजरा कागत पर
कुनू
    कविता
        कथा
            इतिहास
                अप्रयोजनीय
                    अस्थायी
देखैत नञि छी
    हमरा हाथ मे
        चमकैत पंचकमियां भाला
            चलि पड़ल छी हम
                लाल टुह-टुह रक्त सं
पिरथीक विशाल वक्ष पर
    लिखबा लेल
        एगो कविता
            एगो कथा
                एगो इतिहास
आ
    स्वयं बनि जेबा लेल
        एगो घटना
            एगो नाम
                एगो इतिहास •

२३ फरवरी, १९७४

अनुजक नाम / काज अहींक थिक

•

खएबा मे जते
किएक ने होउक तीत
औषध
फल होइते छैक नीक
रोगी कें
बुझा देब ई बात
काज अहींक थिक •

१० जुलाइ, १९७४

व्यवस्थाक नाम / चेतौनी

•

बिना कुनू संकतेक
वा
समयक प्रतीक्षा कें
सूतल ज्वालामुखी
कखनहुं गरजि सकैछ
गिरि शिखरक आरोही
कखनहुं पिछड़ि सकैछ •

१० जुलाइ, १९७४

कंकावतीक कैबरे

•

देखू अवश्य देखू
स्वर्ण सुअवसर आयल आइ
जम्बूद्वीप महान जतय
जन्मलि प्रियदर्शिनी बाइ
जन्मलि प्रियदर्शिनी बाइ
देश श्मशान बनओलक
चमचा हिजरा केर
पूण्य स्थान बनओलक
कह लोचन कविराय
बन्धुगण कला परेखू
कंकावतीक कैबरे
देखू अवश्य देखू •

साँझ हमरा आङ्गन मे

•

बालिका अबोध
तोड़ि गराक हार अपन
मोती समस्त
भरि आङ्गन छिड़िया देलक
अकुअएले रहलै अनुज
बहिनिक किरदानी देखि
हरलै ने फुरलै
हनुमानी अपन तोड़ि लेलक
फेकलक माझ आङ्गन मे
देखलक बहिन दिशि
आर बहिन भाइक दिशि
चन्द्रमा बिहुँसि देलक •

२७ जनवरी, १९७९

जेठुआ मेघ

•

अल्हड़ि कनसारिन कें
छोट-छीन खापड़ि मुदा
मुट्ठी भरि लाइनि
बेशखवा चेरा छलि
धुधुआ रहलि भोरहि सं
धिपा रहलि खापड़ि भरि बालु
आ परितहिं सांझ
उझील देलक एके बेर
चालनि भरि मकै—
भरभरा उठल
उड़ि-उड़ि कें चारूकात छिड़िया गेल
लावा मकैयक सभ
धब्बर-उज्जर
गोल-गोल •

१२ अप्रील, १९७७

★★ मिथिलाक मधुबनी जिला क खजौली थानाक पालीमोहन गामक, कवि, निबंधकार रामलोचन ठाकुर, (कथाकार- अग्रदूत, व्यंग्यकार - कुमारेश काश्यप) मैथिली साहित्य क सुपरिचित नाम अइ, अपन प्रखरता आ वैचारिक सुदृढ़ता स एकटा फराक स्तित्व क मालिक सेहो हिनक चिन्तन धारा क आधार अइ मार्क्सवाद, फलतः 'वर्ग-संघर्ष' आ तइ पर आधारित क्रांति, हिनकर रचना क मूल छोइए. हिनका अग्निलेखन के प्रपंच आ विकृति स बचेबाक प्रमुख श्रेय छनि. प्रस्तुत संकलन क समस्त रचना मिथिला टाइम्स, मिथिला दर्शन, मिथिला भूमि, मातृवाणी, अग्निपत्र, शिखा, मैथिली दर्शन, मैथिली प्रकाश आ शुल्फा मे प्रकाशित, दू टा पटना रेडियो स प्रसारित तथा किछु विदेशी भाषा मे अनुदित अइ. अफ्रिकन, अरेबियन आ बंगाली कविता आ नाटक अनुवाद, रंगमंच द्वारा प्रकाशित नाट्य-विषयक प्रमुख पत्रिका आ अग्निपत्र-मैथिली युवा लेखन संकलन क सम्पादन. स्वभाव स उग्र, विचार स परिपक्व आ व्यवहार स सर्वहारा मैथिली स्टेज क उत्तम अभिनेता— निर्देशक रामलोचन ठाकुर क ई पहिल कविता-संकलन - इतिहासहंता, अग्नि- लेखन क दिशा मे ठोस प्रयास अइ.

—कुणाल